

५२

ति ४ भा का हा हा नू स हा व श्री व ला ॥ हा वि व ह वि नी वे व भा ति
नी क क की त था ॥ २०० ॥ यं का व ती ग थ वा ना ए न श्री को मि
की त था भा का द नी व वि खा गा क ली वे व द व स्ति ता ॥ २०१ ॥
वा य व क उ को उ नि क र्व कि ल वि का न क ॥ या ग य का १ य क र्व
कि भा किं व म म नि स ॥ २०२ ॥ हा नि का ह नि नी ए म धा वी ना

ASHA ARCHIVES

मन्मथरुद्राधि
ASHA ARCHIVES

1. 780

चैव न खतथा ॥ द्वा सि नी सू मू खा चैव यिंग ला व सू क मि नीः
 ॥ २०३ ॥ मा तं भ नी कू ल जा ता क लो सं आ च व क्ति ता ॥ ३ ता द
 य १ क ला च कु कु उ कि म दि ता भ ना ॥ २०४ ॥ सर्वा सू यी त म ५६
 न सा क र्व कि म म भ कि के ॥ ज्ञान रू १ या ग जा म्भ आ च र्या सा
 मु कि या मि ता ॥ २०५ ॥ सर्वा सा म म क र्व तु म न सं म न ल पि

य १ ॥ वा म ना रु र्व ल (खे व सिं रु व कुा म हा व ला ॥ २०६ ॥ महाः
 का ले १ क वी न म्भ हे न व म्भ पु व लु क १ ॥ आ दि व र्ग नि क्ति ता य
 त था गि नी ग ल या लु का १ ॥ २०७ ॥ भ कि क र्व तु म नि ल्यो ह का
 नां ह कि व ल ला ॥ व लु उ जा ग भ धा जा ग उ व का म हा रु ट
 १ ॥ २०८ ॥ ३ त ग ल य नै १ सा र्द्ध ना य का मा र्ग या लु का १ ॥ भ

किं कर्त्तुं मनिष्यं सर्वपा यपत्रिक यः॥ २०६॥ भक्तनीसूयता
नन्दोऽगोवीनश्च पिनाम हः॥ वल्लवा मय निष्ठा वि॥ मित्रि
वकुलमहाधरः॥ २१०॥ कासकटश्च विख्याता प्रजायां वा
प्रतायका॥ प्रतमहावलाद्याः सर्वमकुनूयास्तुकाः॥ २११॥
सञ्जाकर्त्तुं मनिष्यं भक्तिं वतदतं नमः॥ मयैव वल्लव हस्तः

किं प्रकटं दंष्ट्रा गजाधिपः॥ २१२॥ विद्युत्ताडश्च तद्वत् कृत्वा आगि
नी गलमश्च गः॥ विनायकाधिया लांग प्रते सर्वसमन्
तः॥ २१३॥ वलिनन्दो दमग्रीवा हयग्रीवा हनरुथा॥ भक्त
वल्लविषये वदयन् गलयायकाः॥ २१४॥ प्रतवीनामहा
विष्णो महावत यत्रा कुमाः॥ आशूनाशाय मे मय्यर्थं ददन्तु म

मसर्वदा ॥ २१५ ॥ आभादश्च शुभादश्च सुमुखी दुर्मखरुभा ॥
 विद्याविद्युर्कर्त्तव्यं तं गलया लका ॥ २१६ ॥ भक्तिं कुरु सर्वतु
 भक्तिं सदा विद्युर्विना भनं ॥ एतान्न लक्ष्मणो हनुमन्नाडः सु
 न्नरुभा ॥ २१७ ॥ महावक्रा कुरु नाशमाधानको हस्मकाकक
 ॥ कुरु चक्रा विभासा कुरु कल्याणश्च उवाच नानाश्च तव कसियूग

ख्याताः सन्तानः प्रतिया लका ॥ २१८ ॥ यागिनीनां पित्यानिहं स
 र्वसिद्धिप्रदायका ॥ कुमात्राश्च प्रयच्छन्तु सर्वकालं हितैर्विल
 ॥ २१९ ॥ संयतं घृष्टकर्म पूरु लदं तं गजाननं ॥ हृष्टकर्मं स
 नानन्दं सयं मरु वला कटं च तं विनायकानिहं कीचानन्दसम
 न्निताः निर्वृमयतु मविद्यान् हृष्टकर्मं वनच तसा ॥ २२० ॥ श्री

ल० कर्म संवत् १३ व शुभो वट कुरुषु ॥ मा तं एव वा दूका वीन १३
 अक्रासक मस्तु १॥ २२२ ॥ मलायकं प्रयत्नं नित्यं यागिनिर्
 प्रिया ॥ हल मधुति संज्ञा तु पि भाव कुरु नाम नं ॥ २२३ ॥ मा तं गो ५७
 ना कलजा ता १ कुरुषु मम भागिकं ॥ अथ मधु सखा तु ना नाव
 कस मति ना ॥ २२४ ॥ यस्मिन्ना गल मूखा तु यागिनिर्वा वीन नाय

का ॥ दिव्य दह तु सर्व दिव्य ज्ञान समन्विता ॥ २२५ ॥ दिव्या लं
 काल संयन्ता दिव्य दृष्टि महावला १ दिव्य मा (ग) षु क्रीडति ना
 नाय दस संस्क्रिता १ ॥ २२६ ॥ क्रीडति वक्र विद्या से विग्रह नूय
 हनता १ ॥ पुन वाच्य वय वीना १ खलु नं योग तत्त्व ना १ ॥ २२७ ॥ न
 सर्व दिव्य मे मय्यं भागि व मति मूला १ मम निखं प्रयत्नं

कृष्ण उच्यते तस्मात् ॥ २२८ ॥ यदमुं किमता ननु दवता नां वृथक्
 वृथक् ॥ नामानि कोरुयिष्यामि ह किंयुक्तं नव तस्मात् ॥ २२९ ॥ कर्तुं
 तानि मन्त्रद्वयं मातृनद्याद्यवस्थिता ॥ हमिनीसिंघद्वयं मन्त्रं
 स्मिता यत्र मन्त्रनी ॥ २३० ॥ नाग मन्त्रास्मिता दद्यात् नाम्ना उच्यते
 नायका ॥ स मन्त्रकृत् किमाह स्य संस्मिता केयिनास्तथा ॥ २३१ ॥

गृहदद्यात् मुसोनायु मन्त्रिता निवृत्तं सदा ॥ महाकालाय तयून
 त्रयिष्यामि मन्त्राद्वयो ॥ २३२ ॥ अस्मिन्नायायु कायायां लंका
 यां कालिका स्मृता ॥ कर्त्तिंगव तक्षेत्रिण्या कोमलमा मरुतिका
 ॥ २३३ ॥ गृहमेकं कस्मिन्ना दद्यात् नाम्ना उच्यते नायका ॥ काटिवर्ष
 स्मिता हृदा कास्मिन्ना दंष्ट्रिणी स्मृता ॥ २३४ ॥ तामलीयां तुः

दाभाटि कझाटी वात्र (नयत्र) ॥ पिंगनी का मत्र यत्रु सी न वे यत्र
 का स्मृता ॥ २३५ ॥ नया ल मूल काली उ न ग ल मूल नायिका ॥
 सिंह म ज मिनी या का ऊ यं यां उ विला मिनी कल का यत्रु उ न का ५८
 वे ऊ य यां उ नो क्र सि ॥ ख म्ना म् ख उ वे द्या ना व म्म व (ग व लाः
 के टा ॥ २३७ ॥ चं या यां मू क ना या का पि म्नी म म (ध वृ व

कृत्रु ऊ उ न य नि का लं का यां पी उ नी स्मृ ता ॥ २३८ ॥ या यी ड
 वि उ दे (म उ म्ना ल वे या न हा नि का ॥ म्ना म्ना की व ट क वे व रु म
 नी ना म वि ग्र ता ॥ २३९ ॥ सिंह मा या मू खी या का य म नी या
 न (म क ल ॥ कि ना ट म्ना हि नी ना म त थ वे द क्रि (न य (था ॥
 २४० ॥ व म्ना मूल क ना द या कां का ऊ (मो नि का स्मृ ता ॥ अ टः

ववेवदमउवसतमूलकन्यका॥२४१॥जवमादिनसंख्या
तायागिन्याऽयचिवीतसे॥मूदिताज्ञानसंयन्त्रादिशेभ्यर्थस
मन्त्रितां॥२४२॥कीउयकीविविधसंविज्ञानेऽयवनाकसं
॥अनिवात्रितवीर्थरुहेनवकायवादिता॥२४३॥यदमू
किनताऽसवेखकन्दऽयनिवात्रिता॥भाकिर्कर्वनुमनि

६०

त्यंसिद्धिश्चयदमूलमं॥२४४॥ददनुसर्वलावनप्रिविधना
कनात्मना॥अखानिस्वसितावाच्यतिर्यग्निम्यसितासुथा॥
२४५॥उर्द्धनिऽस्वसितावाच्यतिर्यग्निम्यसितासुथा॥उर्द्धनि
स्वसितादद्यानानाहदेर्विहदिता॥२४६॥तयस्कावगृहस्का
वथागस्कावनजासुथा॥कीजवानन्दसंहतामतिग्रहवि

निर्गता ॥ २४ ॥ दिवा दिवा नम दिवा मनः पर्याय कवला
 ॥ योगिनी गलवीनां नयक लंघन वक्रिता ॥ २४८ ॥ सफुषा
 मासिका धरु खेचनी हचनी तथा ॥ सर्वकल्याणवीनां वी ५१
 नां हे कि वल्ला ॥ २४९ ॥ यय कुरु समागम्यं स्मृतितायुक्ति
 ता ॥ सदा ॥ अनका सु अ दृष्टि च सु अ काया महादनी ॥ २५० ॥

कनाला विरुया मधु विरुक्ति का करं किनी ॥ यम कि का तथा
 नात्र का श्री युनया नका ॥ २५१ ॥ मघनादा विमला श्री वायुवम
 यथा उभा ॥ जनाद व्या ॥ कला चक चन्द्रा मृतय नि यु ता ॥ २५२ ॥
 हन ग्ना श्री नव र्ज ला ॥ यम मा ला विरुषिता ॥ मृकि का हन ग्ना
 यना नादपी (थय वक्रिता ॥ २५३ ॥ कान मृत्यु र्ज ना ना ग्ना ह

त्वाभुविजयं सदा॥ प्रयच्छुयत्रं लाक. भावि विह न व त सा॥ २५
 ४॥ को तिनी विजया वे व ग म आ ना घा न दू र्क या॥ दे मूर वा व पू ला
 दिवा उरु सी द्वा ल जि कि का ४॥ २५५॥ ऊ टि ला का ल व र्ण व वा म ५२
 नी व उ वा मू र्खी॥ न व ती का दू की ही मा. सु म ना द व की त था॥ २५६
 ॥ उ क्ता मू र्खी यु व (७) आ. का ल ना शी क या ति नी॥ य मा न की क ना

ती व. न त्त मा ला य ना जि ता॥ २५७॥ मा र्हु लु म लु ल क्ता उ. का ला न
 ल स म यु रा॥ स्फु न कि न ल मा ला रि. श्री ति ना ४ स म ना द ला॥ २५८
 ॥ वि ह ति वि घू लां म द्वा र्क म न त्त क ना ति ता भू॥ प्र य च्छु म हा ला
 मां. वी र्य श्रु म ति मू र्ख मा भू॥ २५९॥ वा ल का नां वि का ना नु यु ति र्क
 दे व दा म्भ हू॥ सि धि का र्य नि मि हा र्थ सा ध का नां हि ता य वे॥

॥२६०॥ मा न न्या सून न्या च यून ना मुख म भि ता ॥ विजाली म क
नी च व स फ मा शु क ने व ती ॥२६१॥ आर्य का ऊं व क ॥ श्वे व ने व ती
पिल पि के का ॥ स्क न्य ग्र हा श्व वि रणा ता ॥ का टि ह द य व कि ता ॥
॥२६२॥ मा न ह द्या सु वे स फ र गि नी नां व रु रु था ॥ से हा तिका
पि ह द स्मा च रु विं भ ति सा कि नी ॥२६३॥ से हा ति ह द रि ना

५३

मु या गि न्य श्व य उ व रु ॥ क स मा लि का वि ह द सु स वि ह न वि ह वि
ना ॥२६४॥ उ च्छा क रु क रु का दा पिं ॥ आ ति म हा व ला शा द व ग्र हा
द म श नि अ षो ह त ग्र हा रु था ॥२६५॥ द र्द ना द र्दि नि का उ षे रु
यो व रु ना क सो ॥ ना क सा ॥ य रु वे रु या ॥ पि भा चा ॥ वे व वा उ मा ॥
२६६॥ ना ना ग्र हा रु य यं च ष वि को मा न सं र वा शा ॥ ग्र हा य ए व

लका ना. नुका वेयूत नाय हा ॥ २६॥ यम कानां सह प्रभु का लकाः
नां मम प्रयं ॥ उक्तु का उ वि रखा ता ॥ म त दय म हा व ला ॥ २६॥
सफ विं म ति वे लू का ॥ य नि सफ नि ला रु था ॥ क त ग य नु धा ना र्थं
मा निका ॥ स फ ज व उ ॥ २६॥ रु उ द्वा द म मा र्था ता मू य म्मी न उ
या द म ॥ वा मू लु हे न मा र्था ता नू ड का ध वि नि रु ता ॥ २००॥ व

६५

सु नि रु त य म ग. ना ना र्थान स म रु त ॥ द ना य व न सं वा ने. रु म
द वे क ले रु था ॥ २०१॥ कू य न शा रु त रु न. व र्था ता. मे कू ल मू व
॥ मा रु र्थान मू ट या या. म क रु के म्भ मा न के ॥ २०२॥ मू न्य गृ ह ष
का ना म. ग्राम सी का रु त वू व ॥ ग द न य र्वा ता. मे व नु व मे व म न
क धा ॥ २०३॥ य व सु नि म रु कू ना. व ति का मा म हा द या ॥ म

किं कर्तुं नु म सर्व एकानां एक वस्तु ता ॥ २०४ ॥ कर्म काया गजा
 ययुदियादि या न न स्रुथा ॥ हया ना ला न नि कुरु या सा म नि प्र
 हा न्ति ता ॥ २०५ ॥ वि च द्वा दि त्या य हा म का उ को पा त न म
 व च ॥ ना म य हा मू रू हा ध उ का ना दि मि द वे ता ॥ २०६ ॥ दि ना
 धि या दि ना आ ग ध्रु व न ऊ य द व ता ॥ सर्व सृष्टि मि म न सा उ

५५

कवि ह वा व स्ति ता ॥ २०७ ॥ ग्र ह या ज वा या ह नु एकाना म नू कं
 य या ॥ य सि द्धा वि वि धा का ना ॥ सा ध ने के च वा दि तै ॥ २०८ ॥ सु
 त्वा र्थे य म हा दा ने सु ये ल्प लो ॥ क्रि या ध ने ॥ ज्ञान वि ज्ञान म नु
 म्ब या ले ना ना वि ले स्रु था ॥ २०९ ॥ हि ह वा व न जा व लु ह न ल्प
 गु ल या रु वा ॥ वा न वा ऊ रू का र्हा मा च व मा दि न न क था ॥ २१० ॥

शिवनाह्वनासिद्धाः पातालतलवासिनः॥ सर्वज्ञादिव्यभैरव्य
 यथायाम्दिताः सदा॥ २८१॥ विरूतिं प्रयुज्यन्ते सर्वसिद्धिमना
 ऊवाः॥ यूननश्च वल्लभाः॥ २८२॥ नानात्र ६६
 यधनालीमाः सुसिद्धाः सिद्धिदानक्षमाः॥ नामादृष्टान्नमस्वामि
 एतन्मया वल्लभाः॥ २८३॥ वज्रकः कालदधुम्वरुणश्च

कनक्षकः॥ अग्निकश्च धुम्वरुः॥ खादकेन हितान्नः॥ २८४॥
 प्रकृदावृक्षनक्षत्रकालकेऽप्यमहावल्लभाः॥ वल्लभाः लोभघनादप्य
 यन्त्राकर्तुः कथाक्षिप्तानः॥ २८५॥ कंकात्रा अक्षकात्रश्च गधर्वा
 धियतिरुथा॥ अन्नकेऽप्येव कर्माः कृष्णकात्रश्च संहरवः॥ २८६॥
 गह्वरिण्युत्तिका नाम्ना अग्निना यन्नवर्जितः॥ शुक्ररामहान्द्रा

कथ्युक्तेन्द्रागुठिकास्तथा॥२८॥कालदलुहयश्रीवान्नत्रकम्
महावल॥यद्वाक्यसूत्रयाकृ१कनासाविकृ४यु४॥२८८॥
सूत्रावसनरुम्भकवस्त्रेनवस्त्रम्॥यत्नानाव४सू४दम्भ ६७
कृ४नावा४महावल॥२८९॥नत्तय४दम्भन४कृ४दाहि४मा४य४
धि४य४स्तथा॥कलास्तस्मात्तु४य४क४ला४भ४यि४मि४ता४भन४॥

म

२९०॥महाभनृर्महाका॥ध॥अग्नि४का४ह४कृ४टी४ध४न४॥यु४वल४तु
४क४क४ह४कृ४टी४त४क४मा४लि४न४॥२९१॥क४क४ना४का४महा४य४ता४म
४नि४ह४द४य४ह४क४न४॥ही४मा४वे४ना४म४क४य४ध४महा४जि४ह्वा४न४
४न४॥२९२॥ही४मना४दा४ह४स४ध४ग४क४क४वि४जि४ल४क४॥उ४क्ता
४मू४खा४घ४न४न४॥ध४य४ध४क४र्ण४क४य४दि४न४॥२९३॥महा४व४लु

निदुर्मखा महा कर्त्तु कटा धन ॥ २२३ ॥ न नाना यव व रुवा नाना
 यव नाना ॥ २२४ ॥ नाना यी १ गता य १० यति यी १० यव सित
 ॥ २२५ ॥ १ कृष्ण नाना ले यति कृष्ण गता सुय ॥ २२५ ॥ संदा हे
 १ यति संदा हे दाने नाना विधि सुथा ॥ ग्राम कर्ष्य ट कृष्ण य
 दने नाना गते सुथा ॥ २२६ ॥ गितिक न न दूर्ग वृवना यवन म

६८

खले ॥ २२७ ॥ सनितु सना महा तीर्थ महा वलय ना कु मे ॥ २२८ ॥ नील
 नी दन संका मित का ना यत ता वने ॥ कया लमा ला एन मिति
 नजा विरुता नना ॥ २२९ ॥ उटा म कूट संकीर्ण दं कु कूट हया
 वरु ॥ २३० ॥ पिकु १ पिकु क म म सु न ना निरु मख ना ॥ २३१ ॥ म
 हा रु निरुता टायै कृष्ण ले कृष्ण विना १ सदा ॥ नाना नृ य धना हा
 मा ले न वा हा न वरु न ॥ ३०० ॥ बायु चर्म यनी धना यूप न

यासि

श्रवणातिता॥ कुरुयासा महावीर्या श्रु सर्ववसा कटा॥ ३०१
॥ सर्वसिद्धिं युयुक्ते श्रुवाह गतिमुता॥ महारथव्यानपू
नकुरु सततं मम॥ ३०२॥ पाटालमातत्राया मुतथा न्याहृत
मातत्र॥ आकाशमातत्राया मुतथा वैवसूषमिका॥ ३०३॥
रुतसुश्रुयत्रयेन यश्रुश्रुश्रुवस्मिता॥ येनातिवान्याः
वाया योगसिद्धिं युलातिता॥ ३०४॥ श्रमयान्मिनीहन्ता

६२

आकिन्नायूतना॥ सुता॥ आमाहिं गुलिकाश्रुवाकनायुमि
नासिका॥ ३०५॥ दमदयगताया मुयथदयगतामुया॥ यश्रु
ज्ञानसमायूकानानागतिममतिता॥ ३०६॥ तिर्यग्भवतयाका
नाश्रुयंकिवावस्मिता॥ भंगमहं यदया गनकातावरुनहृत
या॥ ३०७॥ मीनमलुकविक्रया नकुर्म्म गतिरुथा॥ यथैक

यामि

पुवलावस्था तथा गमय का लुटा ॥ ३०८ ॥ कयाट मतिविश्री का
संकीर्ण पुवला लुटा ॥ गति सुखां पुवर्तक आत्मज्ञानवसनउ
॥ ३०९ ॥ यवाश्रय मदा सुखा ददतु विज्ञेयम् ॥ य सिद्धायेदि
ध कवि नृपवत लावता न का ॥ ३१० ॥ आचार्या साधको मेव
पूजकाः संप्रयासुधा ॥ आनाधिका महावीर्या सुधावा नाधिका

१०

आचार्य मरुकाधि
ASHA ARCHIVES

1.780